समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 21 September 2026

शरद पवार का बड़ा दांव : निकाय चुनाव मे नेताओं को शिंदे और अजित से 'दोस्ती' के लिए फ्री हैडं

Publisher

Published on 06 Nov 2025

महाराष्ट्र की सियासी हलचल फिर तेज हो गई है। राज्य में **नगर परिषद और पंचायत चुनाव 2026** के मद्देनजर महाविकास अघाड़ी (एमवीए) के भीतर रणनीतिक मोड़ देखने को मिल रहे हैं। इस बार **एनसीपी के प्रमुख शरद पवार** ने अपने नेताओं को **बीजेपी के विरुद्ध रणनीति तय करने और शिंदे एवं अजित से दोस्ती निभाने के लिए फ्री हैडं** दे दिया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, महाविकास अघाड़ी में शामिल चार दल—कांग्रेस, शिवसेना (यूबीटी), एनसीपी और राष्ट्रवादी—क्या नगर परिषद और पंचायत चुनाव में एक साथ उतरेंगे, यह अभी स्पष्ट नहीं है।

कांग्रेस और राज ठाकरे के गठबंधन पर विरोध

कांग्रेस ने महाराष्ट्र में **राज ठाकरे** के साथ किसी नए गठबंधन के पक्ष में होने से इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि स्थानीय स्तर पर कांग्रेस की ताकत और जनाधार को देखते हुए राज ठाकरे के साथ तालमेल करना फिलहाल सही नहीं होगा। पार्टी सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस अपने स्थानीय नेताओं और संगठन की रणनीति के अनुसार चुनाव लड़ना चाहती है।

वहीं, **शिवसेना (यूबीटी) और एनसीपी (एसपी)** इस विचार के पक्ष में हैं कि राज ठाकरे के साथ तालमेल बनाकर चुनाव लड़ने से एमवीए की ताकत बढ़ेगी और भाजपा के खिलाफ बेहतर प्रतिस्पर्धा की जा सकेगी।

शरद पवार का रणनीतिक दांव

इस राजनीतिक समीकरण में सबसे अहम भूमिका निभा रहे हैं **एनसीपी प्रमुख शरद पवार**। उन्होंने अपने नेताओं को यह निर्देश दिया है कि वे स्थानीय परिस्थितियों और जमीन पर पार्टी के जनाधार के अनुसार स्वतंत्र निर्णय लें। इसका मतलब है कि स्थानीय नेता **शिंदे और अजित के साथ गठबंधन या दोस्ती** के लिए फ्री हैंड के साथ चुनाव लड़ सकते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह कदम पवार की **सावधानी और राजनीतिक परिपक्वता** को दर्शाता है। वह केंद्र और राज्य की

सियासी परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहते हैं। इस रणनीति से पवार **अपने नेताओं को निर्णय लेने की स्वतंत्रता** दे रहे हैं, ताकि स्थानीय स्तर पर मजबूत उम्मीदवारों और गठबंधन की संभावनाओं को बिना बाधा के तलाशा जा सके।

स्थानीय राजनीति पर असर

महाराष्ट्र में नगर परिषद और पंचायत चुनाव का महत्व केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि राज्य की राजनीति में भी अहम होता है। स्थानीय निकायों में जीत से **भविष्य के विधानसभा और लोकसभा चुनावों के लिए आधार तैयार** होता है।

शरद पवार के इस फ्री हैंड निर्णय से एमवीए की स्थिति **जटिल लेकिन लचीली** हो गई है। नेताओं को अब यह तय करना है कि वे किस स्तर पर और किन क्षेत्रों में शिंदे और अजित के साथ तालमेल बैठाएंगे। इस रणनीति के पीछे विचार यह भी है कि स्थानीय गठबंधन में लचीलापन होने से भाजपा को चुनौती देना आसान होगा और एमवीए के भीतर मतभेद कम होंगे।

बीजेपी और अन्य दलों की प्रतिक्रिया

बीजेपी के नेताओं ने इस रणनीति पर फिलहाल कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि इस कदम से पार्टी की **स्थानीय चुनावों मे बंढ़त** प्रभावित हो सकती है। वहीं, राज्य में अन्य छोटे और क्षेत्रीय दल भी इस रणनीति को ध्यान से देख रहे हैं, क्योंकि यह निकाय चुनावों के समीकरण को बदल सकता है।

भविष्य की राजनीतिक चुनौतियां

महाविकास अघाड़ी के भीतर गठबंधन की रणनीति अभी तय नहीं हुई है। स्थानीय नेताओं के स्वतंत्र निर्णय लेने से चुनाव अभियान में **संपर्क और तालमेल** बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। साथ ही, शरद पवार की रणनीति इस बात पर भी निर्भर करेगी कि **शिंदे और अजित के साथ तालमेल से कितनी सीटे सुंरक्षित रखी जा सकती है।**

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.